Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SHISRRJ | Volume 1 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

"जानकीहरणम्'' महाकाव्य का शास्त्रीय अध्ययन

डॉ. गिरीश प्रसाद मिश्र
सुभाष नगर, सैनी, सिराथू, कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश।

सारांश– महाकवि कुमारदास ने ''जानकीहरणम्'' में राम के रावण युद्ध, विजयोपरान्त अयोध्या प्रत्यागमन के वर्णन में 'निर्वहण सन्धि का प्रयोग स्पष्टतः काव्यशास्त्रीय नियमानुकूल प्रदर्शित किया है।
मुख्य शब्द–जानकीहरणम्, महाकाव्य, शास्त्रीय, कुमारदास, रावण, राम, सर्ग।

लक्ष्य के आधार पर लक्षण की कल्पना की जाती है– इस नीति के अनुसार वाल्मीकि रामायण तथा कालिदासीय महाकाव्यों के विश्लेषण करने से आलोचकों ने महाकाव्य के शास्त्रीय रूप का अनुगमन किया तथा आलंकारिकों ने अपने अलङ्कार ग्रन्थों में उसके लक्षण प्रस्तुत किये। इन आलङ्कारिकों में दण्डी सर्व प्राचीन हैं जिनका महाकाव्य का लक्षण सर्व प्राचीन माना जाता है। आचार्य दण्डी के अनुसार[1]– ''महाकाव्य की रचना 'सर्गो' में की जाती है। उनमें एक ही नायक होता है, जो देवता होता है अथवा धीर उदात्त गुणों से युक्त कोई कुलीन क्षत्रिय होता है। वीर, शृंगार अथवा शान्त–इनमें से कोई रस मुख्य (अङ्गी) होता है। अन्य रस गौण रूप से रखे जाते है। कथानक इतिहास में प्रसिद्ध होता है अथवा किसी सज्जन का चरित्र वर्णन किया जाता है। प्रत्येक सर्ग में एक ही प्रकार की वृत्त में रचना की जाती है, पर सर्ग के अन्त में वृत्त बदल दिया जाता है। सर्ग न तो बहुत बड़े होने चाहिए न बहुत छोटे। सर्ग आठ से अधिक होने चाहिए और प्रति सर्ग के अन्त में आगामी कथानक की सूचना होनी चाहिए। वृत्त को अलंकृत करने के लिए सन्ध्या, सूर्योदय, चन्द्रोदय, रात्रि प्रदोष, अन्धकार, वन, ऋतु, समुद्र पर्वत आदि प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन अवश्य किया जाना चाहिए। बीच–बीच में वीर रस के प्रसंग में युद्ध मन्त्रणा, शत्रु पर चढ़ाई आदि विषयों का भी सांगोपांग वर्णन रहता है। नायक तथा प्रतिनायक का संघर्ष काव्य की मुख्य वस्तु होती है। महाकाव्य का मुख्य उद्देश्य धर्म तथा न्याय की विजय तथा अर्धम और अन्याय का विनाश होना चाहिए।''

आचार्य रूद्रट ने दंडी के द्वारा निर्दिष्ट काव्य लक्षणों को कुछ विस्तार के साथ दुहराया है। ध्यान देने की बात यह है कि रूद्रट ने उतने ही विषय के उपबृंहण तथा अलंकरण को उचित माना है जिससे कथावस्तु का कथमपि विच्छेद न हो सके।[2]

महाकवि कुमारदास द्वारा प्रणीत ''जानकीहरण'' महाकाव्य विंशतितम् सर्गबद्ध रचना है। इसके सर्ग नातिदीर्घ हैं, न ही न्यून अर्थात् एक सर्ग में प्रयुक्त अधिकतम् श्लोक संख्या 101 (अष्टम सर्ग) तथा न्यूनतम संख्या 43 (त्रयोदश सर्ग) है।

इस महाकाव्य का श्रीगणेश वस्तुनिर्देश रूप मङ्गलाचरण से हुआ है। महाकवि कुमारदास ने अयोध्या नगरी की श्री समृद्धि का अति सुन्दर वर्णन प्रथम सर्ग के प्रारम्भिक श्लोकों में किया गया है। महाकाव्य में वर्णित रावण द्वारा जानकी के हरण की घटना इस महाकाव्य के नामकरण का आधार है। यद्यपि इसमें राज्य के राज्याभिषेक तक की सम्पूर्ण कथा उपनिबद्ध है, तथापि महाकवि कुमारदास ने जानकी के हरण की घटना को ही प्रधानता प्रदान करते हुए इस महाकाव्य को ''जानकीहरण'' अभिधान से विभूषित किया है। इसके अतिरिक्त महाकवि कुमारदास की यह गर्वोक्ति भी कृति के इस ''जानकीहरण'' नाम का कारण है–

''जानकीहरणम् कर्तुम् रघुवंशे स्थिते सति।
कविः कुमारदासस्य रावणश्च यदि चामौ।''

इस महाकाव्य की कथावस्तु कल्पना प्रसूत न होकर वाल्मीकीय रामायणादि ग्रन्थों पर अवलम्बित है। राम कथा का वर्णन वाल्मीकीय रामायण, महाभारत के रामोपाख्यान, ब्रह्मवैवर्तपुराण, मत्स्य तथा पद्मादि पुराणों में हुआ है। "जानकीहरणम्'' महाकाव्य में नृपति दशरथ द्वारा संरक्षित अयोध्या नगरी के वर्णन से लेकर सत्यनिष्ठ एवं कर्तव्यपरायण राम द्वारा दुराचारी रावण तथा अन्य राक्षसों का संहार करके जानकी का उद्धार किये जाने की कथा वर्णित है।

रस एवं छन्द :– महाकवि कुमारदास ने अपने महाकाव्य में रसराज शृंगार को अङ्गीरस के रूप में सन्निविष्ट किया है, साथ ही अन्य अङ्ग रसों को भी यथा स्थान सुन्दर अभिव्यञ्जना में कवि सफल हुआ है। एक सर्ग में एक छन्द का प्रयोग हुआ है तथा साहित्यशास्त्रीय नियमानुसार सगन्ति में छन्द परिवर्तित कर दिये गये हैं। किसी सर्ग के अन्त में मात्र एक छन्द तथा किसी सर्ग के अन्तिम श्लोकों में विविध छन्दों का प्रयोग प्राप्त होता है।

वर्णन :– ''जानकीहरणम्'' महाकाव्य में साहित्यशास्त्रानुमोदित प्राकृतिक एवम् अन्य अनेक सुन्दर वर्णनों का समावेश हुआ है, यथा– पर्वतों के अन्तर्गत हिमालय[3] तथा सुवेल पर्वत का वर्णन,[4] ऋतुओं के अन्तर्गत वसन्त,[5] वर्षा तथा शरद् ऋतु का वर्णन,[6] समुद्र वर्णन, नगरों के अन्तर्गत अयोध्या[7] एवम् मिथिलापुरी का वर्णन,[8] मृगया वर्णन,[9] उपवन विहार एवं जलक्रीड़ा वर्णन,[10] राम सीता की रति केलि का वर्णन,[11] राक्षस राक्षासियों के काम क्रीड़ा का वर्णन,[12] यात्रावर्णन के अन्तर्गत राम की वरयात्रा का अयोध्या प्रत्यागमन[13] तथा रावण वध के पश्चात् सीता लक्ष्मण, विभीषण एवं वानरसेना सहित पुष्पक विमान पर आरुढ़ होकर अयोध्या लौटने का वर्णन,[14] सूर्यास्त एवं चन्द्रोदय वर्णन,[15] मुनि वर्णन के अन्तर्गत व्रती विश्वामित्र, एवम् परशुराम का वर्णन,[16] तथा उपाय चतुष्टय का वर्णन आदि। सन्ध्या, प्रदोष रात्रि एवं अन्धकार का अति सुन्दर नीतिविस्तृत वर्णन सूर्यास्त एवम् चन्द्रोदय वर्णन के प्रसङ्ग में हुआ है।[17] ''जानकीहरण'' महाकाव्य में अन्य वर्णन यथा चतुर्थ सर्ग में दशरथ नरेश के रामादि चारों पुत्रों के जन्म का वर्णन, चतुर्थ, पञ्चम तथा षष्ठ सर्ग में यज्ञ का वर्णन, दशम, एकादश तथा पञ्चदश सर्ग में मन्त्रणा का वर्णन तथा अङ्गद के दूत कर्म का पञ्चदश सर्ग में वर्णन आदि अति संक्षेप में प्रस्तुत किये गये हैं।

पुरुषार्थ चतुष्टय की साधना :– महाकवि कुमारदास ने अपनी कृति में धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष – इनका सम्यक्रूपेण वर्णन किया है। द्वितीय सर्ग में वर्णित रावण की कठोर तपस्या पञ्चम सर्ग में व्रती विश्वामित्र का यज्ञ, षष्ठ सर्ग में मुनि विश्वामित्र द्वारा जनक के यज्ञानुष्ठान की प्रशंसा करते हुए यज्ञ की महत्ता एवं सर्वश्रेष्ठता का प्रतिपादन, दशम सर्ग में राजा दशरथ की वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करने की इच्छा आदि मोक्ष के साधन रूप धार्मिक कृत्यों की ओर संकेत करते हैं। इसी प्रकार प्रथम सर्ग में उल्लिखित सार्थलोक का व्यापार हेतु काञ्ची आदि समृद्धिशालिनी नगरियों में आगमन तथा नृपति दशरथ की दिग्विजय आदि में अर्थ की साधना के दर्शन होते है। प्रथम सर्ग में राजा दशरथ का मृगया विहार, तृतीय सर्ग में उपवन विहार तथा जल क्रीड़ा, सप्तम सर्ग में राम सीता का विवाह, विवाहानन्तर राम–सीता की रति केलि आदि के वर्णन में मर्यादित काम की उपलब्धि होती है। ''जानकीहरण'' महाकाव्य में अर्थ तथा काम के साथ समता रखने वाले धर्म की सर्वश्रेष्ठता का प्रतिपादन किया गया है। मोक्ष के साधन रूप, अर्थ तथा काम के सैद्धान्तिक एवं मर्यादित व्यवहारिक रूप का सुन्दर समन्वय कृति में प्राप्त होता है।

नाटक सन्धियों का विवेचन :– बीज, बिन्दु, पताका प्रकरी और कार्य इन पाँच अर्थ प्रकृतियों का क्रमशः आरम्भ आदि पाँच अवस्थाओं के साथ योग होने से क्रमशः मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श और उपसंहिति में पाँच सन्धियाँ कहलाती हैं।[18]

मुख सन्धि :– आचार्य धनञ्जय के अनुसार– जहाँ बीजों की उत्पत्ति होती है और जो अनेक प्रकार के प्रयोजन तथा रस की निष्पति का निमित्त होती है वह मुख्य सन्धि कहलाती है।[19]

महाकवि कुमारदास अपने महाकाव्य ''जानकीहरणम्'' में राम के जन्म, विवाह एवं राज्याभिषेक के प्रस्ताव तक मुख सन्धि का सुन्दर वर्णन किया है।

प्रतिमुख सन्धि :– जहाँ उस बीज का कुछ लक्ष्य रूप में और कुछ अलक्ष्य रूप में उभेद होता है वह प्रतिमुख सन्धि कहलाती है।[20]

''जानकीहरण'' महाकाव्य में मन्थरा के षड्यन्त्र से राम को वनवास दिये जाने का प्रसङ्ग तथा तज्जन्य संकटापन्न स्थिति आदि में प्रतिमुख सन्धि के सुन्दर वर्णन दर्शन होते हैं।

गर्भ सन्धि :– जहाँ दखलायी देकर खोये गये बीज का बार–बार अन्वेषण किया जाता है, वह गर्भसन्धि कहलाती है।[21]

''जानकीहरण'' महाकाव्य में रावण द्वारा सीता के अपहरण में गर्भसन्धि दृष्टिगोचर होती है।

विमर्श सन्धि :– जहाँ क्रोध य से, व्यसन से अथवा प्रलोभन से फल प्राप्ति के विषय में विमर्श किया जाता है, तथा जिसमें गर्भ सन्धि द्वारा विभिन्न बीजार्थ का सम्बन्ध दिखलाया जाता है, वह विमर्श या अवमर्श सन्धि कहलाती है।[22]

महाकवि कुमारदास ने ''जानकीहरणम्'' में सुग्रीव मैत्री के अनन्तर युद्ध वर्णन तक विमर्श सन्धि का प्रयोग किया है। जहाँ बीज से सम्बन्ध रखने वाले मुख सन्धि आदि में अपने–अपने विखरे हुए प्रारम्भ आदि अर्थों का एक मुख्य प्रयोजन के साथ सम्बन्ध दिखलाया जाता है, वह ''निर्वहण'' सन्धि कहलाती है।

महाकवि कुमारदास ने ''जानकीहरणम्'' में राम के रावण युद्ध, विजयोपरान्त अयोध्या प्रत्यागमन के वर्णन में 'निर्वहण सन्धि का प्रयोग स्पष्टतः काव्यशास्त्रीय नियमानुकूल प्रदर्शित किया है।

सन्दर्भ–

1. काव्यादर्श 1/14–19
2. काव्यालंकार– 16/17–19
3. जानकीहरणम् 1/47–52, 14/11–44
4. जानकारीहरणम् 1/47–52, 14।11–44
5. वही, 3/1–14, 11/40–95
6. वही 12/2–4, 14/20
7. वही 20/10, 17/22, 1/1–11, 90
8. वही 20/10, 17/22, 1/1–11, 90
9. वही, 6/18–30, 1/53–62/69–72
10. वही, 6/18–30, 1/53–62/69–72
11. वही, 3/15–49 तथा 8/1–53 इ0सं0।
12. वही, 3/15–49 तथा 8/1–53 इ0सं0।
13. वही, 16/28–68 तथा 9/12–22
14. वही, 16/28–68 तथा 9/12–22
15. वही, 20/1–16
16. वही, 8/55–72, 16/1–20
17. अर्थप्रकृतयः पंच पंचावस्थासमन्विताः। यथासंख्येन जायन्ते मुखाद्याः पंचसन्धयः।। आचार्य धनंजय दशरूपक प्र0प्र0 22
18. मुख्यं बीज समुत्पत्तिर्नानार्थ रससम्भवाः दशरूपक प्र0प्र0 24
19. लक्ष्यालक्ष्यतयोद्भेदेस्तस्य प्रतिमुखं भवेत्। आचार्य धनंजय दशरूपक प्र0प्र0 30
20. गर्भस्तु दृष्टनष्टस्य बीजस्यान्वेषण मुहुः। वही, प्र0प्र0 36
21. क्रोधेनावमृशेद्यत्र व्यसनाद्य वा विलोभनात्।
22. गर्भनिर्भिन्नबीजार्थः सोऽवमर्शः इति स्मृतः। वही, प्र0प्र0 43
23. बीजवन्तो मुखाद्यार्था विप्रकीर्णा यथायथम्। ऐकार्थ्यमुपनीयन्ते यत्र निर्वहणं हि तत्। आचार्य धनंजय दशरूपक प्र0प्र0 48।